T.T.D. Religious Publications Series No. 1111
Price :

Published by **Sri M.G. Gopal,** I.A.S., Executive Officer,
T.T.Devasthanams, Tirupati and Printed at T.T.D. Press, Tirupati.

श्रीनिवास बालभारती

त्यागराज

हिन्दी अनुवाद

प्रो.आई.एन. चंद्रशेखर रेड्डी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 163

त्यागराज

तेलुगु मूल

डॉ.के. सर्वोत्तमन

हिन्दी अनुवाद

प्रो.आई.एन. चंद्रशेखर रेड्डी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2014

Srinivasa Bala Bharati - 163
(Children Series)

THAYAGARAJ

Telugu Version
Dr. K. Sarvottaman

Hindi Translation
Prof. I. N. Chandrasekhar Reddy

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No. 1111
©All Rights Reserved

First Edition - 2014

Copies : 5000
Price :

Published by
M.G. Gopal, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ. एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया । इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया । प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा ।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्ष करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुईं उन्होने संस्कृति की दृढ नीवं डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

क्या कहीं संगीत से दीप जलाये जाते हैं? कैसे जलेंगे? पता नहीं। कहीं भी ऐसा नहीं सुना। शायद सुना है? ऐसा ही एक महत्मा है। पुदुक्कोटै संस्थान में कभी ऐसा घटित हुआ है। संगीत के लिए परीक्षा की घडी थी। ज्योतिस्वरूपिणी ने राग का आलाप करके भरी सभा को आश्चर्य में डालते हुए दीप स्तंभ की बत्तियों को अपने आप को जलने के लिए विवश किया। उस नाद ब्रह्म कौन हैं वे? संगीत सरस्वती का दूसरा नाम ही त्यागय्या।

- प्रधान संपादक

त्यागराज

गोदावरी का पानी पीने से कविता की शक्ति आयेगी, कावेरी का पानी पीने से संगीत की शक्ति आयेगी, ऐसा बुजुर्गों का कहना है। गोदावरी नदी के तट पर कई महाकवियों का पैदा होना, उसी प्रकार कावेरी नदी के तट पर कई गायकों का पैदा होना ही इस का कारण है।

जिस प्रकार आंध्र प्रदेश के लिए गोदावरी का प्रदेश है उसी प्रकार तमिलनाडु के लिए तंजावूर प्रदेश लोकप्रिय धान का भंडार है। तंजावूर जिले में कावेरी नदी के तट पर तिरुवायूर नामक एक गांव है। उस गांव में प्रसिद्ध वाग्गेयकार त्यागय्या का जन्म हुआ है।

त्यागय्या का जन्म :

त्यागय्या पंडित वंश में जन्म लेनेवाला महापुरुष है। त्यागय्या के दादा गिरिराज कवि हैं। वे शाह भूपाल के दरबार में वाग्गेयकार के रूप में रहा करते थे। त्यागय्या के पिताजी रामब्रह्मम है। वे काकर्ल वंशज हैं। उन का भारद्वाज गोत्र है। 'मुलिकिनाडु' नामक शाखा के तेलुगु ब्राह्मण हैं। रामब्रह्म भी सामान्य मनुष्य नहीं रहा। तंजावूर पर शासन करनेवाले दूसरे तुलजाजी के द्वारा प्रशंसित राम भक्त हैं। रामब्रह्मम की पत्नी सीतम्मा है।

सपना सच निकला :

रामब्रह्मम के तीन बेटे हैं। रामब्रह्मम के तिरुवायूर में रहते समय बडे बेटे का जन्म हुआ था। इसलिए उस गांव के देवता जपेश के नाम से उसका नामकरण किया। स्वयं राम भक्त होने के नाते दूसरे बेटे के लिए रामनाथ का नामकरण किया। तिरुवायूर में स्वामी त्यागराज स्वामी है।

रामब्रह्मम त्यागराज का भक्त भी हैं। एक दिन स्वामी ने सपने में दर्शन देकर कहा -

''रामब्रह्मम को आश्चर्य हुआ। अपने को संगीत और साहित्य में निष्णात पुत्र पैदा हो रहा है समझकर उन्हें बडी प्रसन्नता हुई। वह सर्वजिन्नाम वर्ष था। वैशाख मास की षष्ठी है। अंग्रेजों के कैलेंडर के अनुसार ठीक ०४-०५-१७६७ था। अपनी पत्नी को सुख प्रसव हो, रामब्रह्मम भगवान से यही प्रार्थना कर रहा था। इतने में सुहागिनों ने बताया है कि सीतम्मा ने लडके को जन्म दिया। रामब्रह्मम के संतोष की सीमाएं नहीं रहीं। उसने सोचा कि अपना जन्म धन्य हो गया। पैदा होनेवाले बच्चे को 'त्यागराजु' कहकर नामकरण किया।

त्यागराजु को बचपन से पिताजी के द्वारा की जानेवाली राम पूजा बहुत पसंद थी। घंटों भर स्वयं भी पूजागृह के समीप ही बैठता था। पिताजी के लिए आवश्यक द्रव्य उन्हें देता था। इससे अलग माताजी पुरंदरदास के कीर्तनों को तथा जयदेव के अष्टपदों को बहुत ही सुरीली कंठ से गाती थी। उन को तन्मय होकर सुनते हुए आंखों से भाष्प गिराता था। शायद इसीलिए त्यागराजु कीर्तनों में दो तिहाई भाग रामायण इतिवृत्त के बन पडे हैं।

विद्याभ्यास :

त्यागराजु सात साल का हो गया। उस समय के आचार के अनुसार रामब्रह्मम ने अपने बेटे का उपनयन कराया। स्वयं गुरु बनकर विद्याभ्यास किया। उपनीत होने के कारण त्यागराजु कभी कभी पिताजी को पूजा में सहायता करता था। एक दिन त्यागय्या ने पूजा करते हुए भक्ति में तन्मय

होकर 'नमो नमो राघवाय' नामक दिव्य संकीर्तन को गाया। उन दिनों में मुद्रण यंत्र नहीं थे। कागज भी नहीं थे। उस कारण से कहा जाता है कि त्यागराजु अपने कीर्तनों को दीवार पर लिखता था। रामब्रह्मम ने एक दिन दीवारों की लिखावट को देखा। पहले उन्हें पागलों की लिखवट समझी। लेकिन एक पल के बाद सोचकर उन्हें पंडितों को दिखाया। पंडित लोगों ने उन कीर्तनों में स्थित संगीत-साहित्य को पहचानकर प्रशंसा करके त्यागराजु को संगीत सिखाने की सलाह दी है।

शोंठी जी की शिष्यता :

तिरुवैयारु गांव में शोंठी वेंकटरमणय्या नामक एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ रहा करते थे। वे अपने घर में अपने शिष्यों को संगीत सिखाते थे। रोजाना त्यागय्या पूजा के लिए आवश्यक फूल तोडने निकटवर्ती बगीचे में जाता था। उसी रास्ते में शोंठी वेंकटरमणय्या का मकान रहता था। वहाँ गुरू के द्वारा अपने शिष्यों को पाठ पढाते त्यागय्या भी थोडी देर खडे होकर सुनता था। फूलों के लिए जाकर रोजाना देर से लौटनेवाले बेटे पर रामब्रह्मम ने निगाह रखी। एक दिन उन्होंने त्यागय्या का पीछा किया। त्यागय्या के शोंठी वेंकटरमणय्या के मकान के पास रुककर संगीत सुनने को रामब्रह्मम ने जान लिया। इसी कारण से उन्होंने त्यागय्या को वेंकटरमणय्या के पास ही शिष्य के रूप में छोडा है। इससे त्यागय्या की पांचों उंगलियाँ घी में हो गयीं। बहुत ही कम समय में त्यागय्या गुरु से प्रशंसित शिष्य बन गया।

विद्वत्सभा :

एक दिन शोंठी वेंकटरमणय्या जी ने विद्वत्सभा का आयोजन किया। कई संगीतज्ञ और पंडित लोग आये। उस संदर्भ में गुरुजी ने

त्यागय्या को भी गाने के लिए आदेश दिया। त्यागय्या ने गुरु को नमस्कार करके तथा सभासदों को प्रणाम करके बिलहरी राग में 'दोरकुना इटुवंटि सेवा' (क्या कहीं ऐसी सेवा प्राप्त हो सकती है?) नामक गीत गाया। उस कीर्तन के साहित्यिक तत्व और गाने पद्धति से सभी मुग्ध हो गए। सभी प्रसिद्ध संगीतज्ञ त्यागय्या की तथा उन के गुरु शोंठी वेंकटरमणय्या जी की हार्दिक प्रशंसा की। उस समय अपने चरणों का नमस्कार करनेवाले त्यागय्या को उठाकर आलिंगन करके शोंठी रमणय्या ने 'दोरकुना इटुवंटि शिष्युडु' (क्या कहीं ऐसे शिष्य प्राप्त होंगे) कहते हुए आनंदबाष्प गिराये। इससे बढकर तंजावूर राजा के द्वारा दिए सभी पुरस्कारों को अपने शिष्य को सादर समर्पित किया।

मधुर गान से दीप जलाना :

एक बार अपने शिष्य त्यागय्या के साथ शोंठी वेंकटरमणय्या जी पुदुक्कोटै गए। पुदुक्कोटै के संस्थानाधीश रामचंद्र तोंडमान पंडितों के आदर सत्कार करनेवाले हैं। कलाविद भी थे। पता नहीं क्यों उस दिन गायकों, इससे बढकर संगीत कला की परीक्षा लेना चाही। सभा के मध्य में एक दीप स्तंभ को रखा। तेल से भीगी बत्तियों को दीप स्तंभ में रखवाया। अगर संगीत में दिव्य शक्तियाँ होंगी या यदि गायक समर्थ हो तो अपने गायन से उन्हें जलाने का आदेश दिया।

भरी सभा स्तब्ध रह गयी। गायक तनाव में आ गए। यह सिर्फ गायकों की परीक्षा नहीं बल्कि संगीत के लिए ही एक बडी चुनौती है। सभी ने शोंठी वेंकटरमणय्या की तरफ देखा। शोंठी रमणय्या ने त्यागय्या की तरफ देखा। त्यागय्या ने सभी को नमस्कार करके ज्योतिःस्वरूपिणी राग में गीत गाया। गीत पूरा होते होते दीप देदीप्यमान रूप में जल उठा।

महाराजा आश्चर्यचकित हो गए। विद्वानों ने हर्षनाद किया। सभासद संभ्रम में पड गए। आखिर तोंडमान ने सगीत कला की परीक्षा लेने साहस करनेवाले अपने को क्षमा करने के लिए सभी विद्वानों से प्रार्थना की। उन्होंने त्यागय्या का बहुत बडा सम्मान किया।

त्यागय्या युवक बना। गुरुजी शोंठी वेंकटरमणय्या जी से जो कुछ भी सीखना था सीख लिया। त्यागय्या का मामू वीणकालहन्तय्या जी थे। वे प्रसिद्ध वैणिक थे। उन के घर में कई संगीत के ग्रंथ हुआ करते थे। उन सभी को पढनेवाले त्यागय्या को संगीत में कई संदेह हुए। उन को दूर करने का मार्ग भी नहीं रहा। ऐसे में एक विचित्र घटना उसके जीवन में घटित हुई।

नारदानुग्रह :

एक दिन नारद महर्षि सन्यासी के वेष में त्यागय्या के घर आये। त्यागय्या ने उस सन्यासी का ससम्मान स्वागत करके आतिथ्य स्वीकार करने की विनति की। सन्यासी स्वीकार करते हुए अपने साथ लायी पुस्तकों को वहीं छोडते हुए कावेरी में नहाकर भिक्षा के समय तक लौट आऊंगा कहकर चले गए। त्यागय्या ने इसे स्वीकार किया।

मध्याह्न तक भी सन्यासी का कोई पता नहीं चला। भोजन के लिए बुलाकर अतिथि के आने के पहले भोजन करना अधर्म समझकर त्यागय्या ने काफी देर तक प्रतीक्षा की। नदी के तट पर भी सन्यासी दिखाई नहीं पडे। उस दिन पूरा त्यागय्या उपवास में ही रहा।

रात भी हो गयी। त्यागय्या रामस्मरण करते हुए सो गया। सपने में नारद के दर्शन हुए। उन्होंने कहा - ''त्यागय्या! मैं ही आज सन्यासी के

वेष में तुम्हारे घर आया था। तुम अवतार पुरुष हो। तुम्हारे संदेहों की निवृत्ति के लिए संगीत के ग्रंथ लाया हूँ। उन्हें पढकर अपने संदेहों को दूर कर लो। तुम्हारे साथ ही संगीत का अनंत प्रचार संभव होगा।'' यह कहकर नारदजी अदृश्य हो गए।

त्यागय्या की नींद खुल गयी। सन्यासी के द्वारा छोडी गयी पोटली को खोल कर देखा। उस में 'स्वर्णावमु' और 'नारदीयमु' नामक संगीत ग्रंथ थे। त्यागय्या के संतोष की सीमा नहीं रही। उन्हें पढने से त्यागय्या के संदेह ऐसे दूर हो गए जैसे सूरज की किरणें लगने से बर्फ पिघल जाता है। अपने संदेहों की निवृत्ति करनेवाले नारद जी को 'राजिल्लु वीण कल्गु गुरुराय' (वीणावादी गुरु आप की जय हो) कहकर 'श्री नारद नाद सरसीरुह भृंग शुभांग श्री त्यागराजसुत श्री रमां पालय' कहकर 'वह नारद नारायण स्मरणा नंदानुभवम गल शरदिंदु विभाव घनाघन सारमुगानु ब्रोवुमिक' कहकर कई कीर्तन गाये।

त्यागय्या के दूसरे बडे भाई रामनाथुडु थे। यौवन में ही उनकी असमय मृत्यु हुई थी। बडे भाई जपेश का विवाह हो गया। उसके बाद माता पिता ने पार्वतम्मा नामक कन्या के साथ त्यागय्या का अत्यंत वैभव के साथ विवाह कराया। उस के दो वर्ष बाद रामब्रह्मम गंभीर रूप से बीमार पड गए। सारी दवाएँ बेकार गयीं। वैद्यों ने आशा छोड दी। रामब्रह्मम की अंतिम सांस छोडते समय उनकी धर्मपत्नी सीतम्मा पास में ही थी। पति के प्रति उनको बडी श्रद्धा थी। इसलिए भारतीय संप्रदाय के अनुसार पति के सती होने की कामना उन्होंने व्यक्त की। लेकिन रामब्रह्मम ने उसे स्वीकारा नहीं। भविष्य में त्यागय्या के वैभव को देखने

के लिए उसे जीवित रहने की इच्छा प्रकट की। सीतम्मा अपने पति के आदेश का विरोध नहीं कर पायी। पूरी तृप्ति के साथ रामब्रह्मम ने अपनी अंतिम सांस छोडी। पिता के निधन से त्यागय्या को सदमा पहुंचा। फिर भी पूरे धैर्य के साथ अपने मन को संगीत साधना पर लगाया।

मंत्रोपदेश :

'उंछवृत्ति' का मतलब भीख मांगना नहीं है। इहलोक की कामनाओं को और उनसे जुडे बंधनों को नियंत्रण में रखने का साधन ही उंछ वृत्ति है। भिक्षाटन में भिखारी के भीख मांगना अगर मुख्य है तो उंछ वृत्ति में गृहस्थ ही प्रीति के साथ वस्तुओं को समर्पित करना संप्रदाय कहलाता है। उस युग में उंछ वृत्ति स्वीकार करके सभी को भगवदनुग्रह समझकर जीवन को समाप्त करनेवाले कई हुए। कहा जाता है कि उन में से एक त्यागय्या के घर के सामने से जाता था। उन गीतों को सुनकर त्यागय्या मुग्ध हो गया। अपने घर के पास उस ब्राह्मण के आते ही त्यागय्या उस की पाद पूजा करके बरतन भर धान देकर भेजता था। इस रूप में कई दिन बीत गए। त्यागय्या के गुणों ने सन्यासी के मन को जीत लिया। त्यागय्या को आशीर्वाद देने को उसने सोचा। ''त्यागय्या! तुम्हारी भक्ति से मैं प्रसन्न हूँ। अगर मैं तुझे विद्या देने लगूं तो वह पुनरुक्ति हो जाएगी। तुम संगीत के बारे में गहराई से जाननेवाले हो। अगर तुम्हारा जन्म धन्य होना है तो रामनाम स्मरण करना अच्छा है। अपने वंश में राम नाम संकीर्तन की परंपरा है। तुम भी ९६ करोड राम नाम जप करो! तुम्हें सभी सुख-सुविधाएँ रामानुग्रह से प्राप्त हो जाएंगी।'' इस रूप में आशीर्वाद देकर वे अंतर्धान हो गए।

तारक मंत्र प्राप्त हुआ :

तिरुवैयूर में पंचनदीश्वर मंदिर है। उस मंदिर में दक्षिण कैलास नाम से एक मंटप भी है। त्यागय्या उस मंटप में बैठकर मध्याह्न के समय रामतारक मंत्र जप करने लगा। ३९ वर्षों में ही ९६ करोड जप पूरा किए। त्यागय्या को सर्वस्व राममय लगा। बाल मोहन रूप में राम ने दर्शन दिए। दिव्य तेज से त्यागय्या का चेहरा चमक गया।

जीवनोपाधि :

त्यागय्या के पूर्वजों ने राजाश्रय में ही जीवनोपाधि प्राप्त की थी। पता नहीं क्यों त्यागय्या को यह पद्धति अच्छी नहीं लगी। बचपन में अपने पिताजी के साथ दरबार जाते समय राजाओं के अहंकार और मूर्खता को पहचानकर उसी समय से मानसिक रूप से राज-सेवा के प्रति विरोध को विकसित किया। इसलिए अपने जीवन को पवित्र बनाने के लिए उन्होंने 'उंछ वृत्ति' को स्वीकार किया। तानपुरे को धरकर एक दो शिष्यों के साथ ताल के साथ राम-नाम बजाते साथ चलते गृहस्थों के द्वारा समर्पित संभर स्वीकार करते थे। घर पहुंचकर उनसे भगवान को नैवेद्य चढाकर स्वयं भोजन करते थे। यह 'ऊंचा वृत्ति' भी वह रोजाना नहीं करता था। सप्ताह में सिर्फ एक बार करता था। कभी दूसरे संदर्भों में समीप गांव के लोगों की इच्छा पर भजन गाने जाया करता था।

त्यागय्या का बडा भाई जपेश था। अपने छोटे भाई त्यागय्या के प्रति उसे बडा प्रेम था। जपेश चाहते थे कि संगीत और साहित्य में निष्णात अपनी विद्या से राजाओं की प्रशंसा का पात्र हो और धन वस्तु आदि प्राप्त करके सुखी जीवन बिताये। कई बार अपने भाई से इसकी

चर्चा भी की। गांव के बुजुर्गों से भी कहलवाया। लेकिन जवाब दिए बिना त्यागय्या ने अपने को बचाया।

क्या निधि सर्व सुखकारी है?

त्यागय्या की कीर्ति आखिर तंजावूर के राजा तक पहुंच गयी। वैणिक गायक परम भक्त त्यागय्या का गायन सुनने को दूसरे शरभोजी महाराज को बडी इच्छा हुई। महाराज के आदमी त्यागय्या के पास आये। राजा को लेकर एक दो गीत बनाकर गाने से २०(१०) (१०) एकड जमीन पुरस्कार के रूप में राजा के देने की आशा दिखाई। लेकिन इस से त्यागय्या को चिढ हुआ। ''निधि चाला सुखमा - रामुनि सन्निधि सेवा सुखमा - निजमु तेल्पुमु मनसा'' (अर्थात् क्या निधि सर्वसुखकारी है? या राम की सेवा-समीपता सुखकारी है? हे मन रे तू सच बताओ) जैसे अपने को प्रश्न करके शरभोजी के द्वारा भेजे गए पुरस्कारों को त्यागय्या ने ठुकरा दिया।

तंजावूर से आये राज सिपाहियों को इससे बुरा लगा। गांव के लोग डर गए कि राजधिक्कार का क्या परिणाम होगा। लेकिन माँ सीतम्मा अपने पुत्र के साहस से प्रसन्न हुई। कम से कम अब तो भाई रास्ते में आयेगा, समझनेवाले जपेश को निराश ही होना पडा।

शरभोजी का दुराग्रह :

राज सिपाहियों ने त्यागय्या की ठुकराहट को राजा शरभोजी से बताया। शरभोजी को बडा गुस्सा आया। त्याग्यया को बांध कर लाने का आदेश दिया। राजा के सिपाही तुरंत निकल पडे। राज सिपाहियों के गांव के बाहर पहुंचते ही इधर शरभोजी के पेट में असहनीय पीडा शुरू हो

गयी। वैद्यों के कई प्रकार के उपचार से भी कोई फायदा नहीं हुआ। स्वयं आयुर्वेद विद्या जानने के कारण कई उपाय वैद्यों को बताया। फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ।

मानव प्रयत्न असफल होने पर दैव प्रयत्न करना मानव का सहज गुण है। इसलिए जोतीषी ने राजा शरभोजी के जातक चक्र को देखना शुरु किया। आखिर उन्होंने पता लगया है कि एक महापुरुष का अपमान करने से ही यह परिणाम निकला है। शरभोजी चिंता में डूब गए।

शरभोजी महाराज के तीसरे मंत्री अण्णा अयंगार को त्यागय्या के प्रति राजा का व्यवहार बुरा लगा। इसलिए उस महानुभाव के अनुग्रह के लिए वह स्वयं प्रयत्न में लग गया। तिरुवैयूर पहुंचते पहुंचते मध्याह्न हो गया। तभी ऊंचा वृत्ति से घर लौटकर त्यागय्या ने पूजा करना शुरु किया था। पूजा के उपरांत अण्णा अयंगार ने अपने आने के कारण को त्यागय्या को बताया। महाराजा के रोग से त्यागय्या भी चिंतित हो गया।

''मंत्री जी! शरभोजी हम सबके लिए प्रभु हैं। इससे बढकर विद्यावल्लभ भी हैं। उन के रोग से पीडित होने से मुझे चिंता हो रही है। इस तुलसी तीर्थ-जल को राजा को पिलाइए। श्री रामचंद्र जी ही राजा की रक्षा करेंगे।'' कहते हुए तुलसी जल के बरतन को उसे दिया। त्यागय्या के लिए लायी पालकी में उस तीर्थ-जल के बरतन को रखकर अण्णा अयंगार तंजावूर के लिए निकल पडे। राज मंदिर पहुंचते ही त्यागय्या के द्वारा दिए गये तुलसी-जल को राजा को दे दिया। स्वामी के तीर्थ-जल तीन बार लेते ही शरभोजी की पेट-पीडा कम होने लगी। त्यागय्या के प्रति गुस्सा भी कम हो गया। इससे बढकर स्वयं त्यागय्या के घर जाकर अपने अपराध को क्षमा करने की प्रार्थना की। तब से बंधु मित्रों के साथ

अंतःपुर के जनों के साथ त्यागय्या के एकादशी भजनों में भाग लेते अपने जन्म को शरभोजी ने सार्थक किया। इस घटना के कुछ ही दिनों के बाद माँ सीतम्मा का देहांत हुआ। माँ के निधन से जपेश ने अपने गुस्से को त्यागय्या पर सीधे व्यक्त करना शुरु किया।

मूर्तियों का अदृश्य होना :

त्यागय्या दिन में अधिकांश समय राम-पूजा में ही खर्च करता था। राम की मूर्ति के पंचायतन आराधना में वे सर्वस्व भूल जाते थे। पेट की ज्वाला बुझाने में तथा रोजमर्रा जीवन के अप्रयोजनकारी त्यागय्या की पूजाओं को लेकर जपेश को बडा चिढ होता था। मूर्तियों के रहने तक त्यागय्या अपने पागलपन को नहीं छोडेगा समझकर जपेश उन मूर्तियों को कावेरी नदी में फेंक दिया। किसी काम से बाहर जाकर लौटनेवाले त्यागय्या को पूजा के कमरे में मूर्तियाँ दिखाई नहीं पडीं। वह आश्चर्यचकित हो गया। सर्वस्व उसे शून्य लगने लगा। त्यागय्या मानसिक रूप से बहुत थक गया। खानपान छोडकर रात दिन राम जप में लीन रहा। एक दिन राम ही सपने में दर्शन देकर कावेरी में छिपकर रहने की बात कही। त्यागय्या के द्वारा उस प्रदेश में छानबीन करने पर मूर्तियाँ प्राप्त हो गयीं। बडी प्रसन्नता से त्यागय्या ने 'कनुगोंटिनी श्री रामुनि नेडू' (आज मैं ने राम को पा लिया) नामक गीत गाया। लेकिन अपने पाप कार्य के फल ने जपेश को वैसे ही नहीं छोडा।

अपकार के लिए उपकार :

जपेश के पुत्र का नाम रामुडु है। एक दिन वह खेलते खेलते कावेरी में गिर गया। पानी में डूबनेवाला फिर ऊपर नहीं आया। अपने छोटे भाई

पर बनाये द्वेष और पुत्र की असमय मृत्यु ने जपेश को कमजोर बनाया। बीमार पड कर बिस्तर पकड गया। त्यागय्या को अपने बडे भाई के प्रति अपार गौरव था। इसीलिए बडे भाई के परुष गुण और चिढचिढाहट को वात्सल्य भाव से ही लिया। मूर्तियों को फेंकवाने से तथा गुस्से में घर के दो भागों में बंटवारा करने से भी भाई के प्रति द्वेष नहीं पाला। कभी कुछ नहीं कहा। अपने अपराध से भाई के बीमार पडने के बाद अपने भगवान से प्रार्थना की ''हे रामचंद्र, मैं ने कभी अपने लिए कुछ नहीं मांगा। अपराधी को भी क्षमा करने का उदार गुण आप का है। मेरे भाई को स्वास्थ्य के साथ दीर्घावधि तक जीवित रहने का वरदान दो।'' कहते हुए ''कई अपराध करनेवालों को हे राजन्न तू ने क्षमा की'' भाव कीर्तन गया। धीरे धीरे जपेश ठीक हो गए। त्यागय्या को गले लगाकर उस दिन से वह भी राम भक्ति में लीन हो गया। अपने को राम का दास बना लिया। त्यागय्या को दूसरी पत्नी से सीतालक्ष्मी नामक पुत्री हुई। युवति बनने के बाद तिरुवाडि के पास अग्रहार में रहनेवाले कुप्पुस्वामय्या के साथ उसका विवाह बडे ही वैभव पूर्ण ढंग से करवाया। उसी संदर्भ में त्यागय्या के शिष्य और अभिमानी लोगों ने उन्हें कई महंगे पुरस्कार प्रदान किए। रायवेलूर के पल्लवी एल्लय्या के द्वारा बनाया गया सीतालक्ष्मणसमेत कोदंडराम स्वामी का चित्रपट वेंकटरमण भागवतार ने अपने गुरूजी को समर्पित किया। उस संदर्भ में त्यागय्या ने भाव विभोर होकर 'ननु पालिंप वच्चितिवो' (मुझे तरने के लिए आ पहुंचे क्या?) कीर्तन गाया था।

यात्रा संबंधी विशेषताएँ :

कंची में उपनिषद्ब्रह्म नामक बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान रहा करते थे। त्यागय्या के पिताजी राम ब्रह्मम और उपनिषद्ब्रह्म दोनों सहअध्यायी थे।

अर्थात् दोनों ने एक ही गुरु के पास विद्यार्जन किया था। अपने प्रिय मित्र का पुत्र संगीत-साहित्य में अत्यंत लोकप्रिय हुआ है सुनकर उन्होंने एक बार त्यागय्या को कंची बुलाया। साथ ही अतिथि सत्कार स्वीकार करके कंची के देवता वरदराज स्वामी, कामाक्षी, आदि के अनुग्रह प्राप्त करने के लिए निमंत्रण भेजा। त्यागय्या ने उसे स्वीकार किया। शिष्यों ने यात्रा का कार्यक्रम बनाया। पालकी में गुरु को बिठाकर स्वयं ढोते हुए यात्रा का आरंभ किया।

त्यागय्या कुछ दिनों के लिए कांची में उपनिषद्ब्रह्म के यहाँ अतिथि बनकर रहा। साथ ही उस प्रदेश के एकाम्रनाथ स्वामी, कामाक्षी देवी, वरदराज स्वामी जी के दर्शन करके कई कीर्तन गाये। तेर तीयगरादा? (क्या परदा हटाया नहीं जा सकता)

त्यागय्या के द्वारा दर्शित तीर्थों में तिरुपति एक है। प्रातःकाल ही त्यागय्या अपने शिष्यों के साथ श्री वेंकटेश्वर की सेवा के लिए तिरुपति से निकला। लेकिन तिरुमल पहुंचते पहुंचते मध्याह्न हो गया। स्वामी के दर्शन के लोभ से तुरंत पुष्करिणी में स्नान करके त्यागय्या मंदिर में गया। लेकिन तभी स्वामी के मध्याह्न समय की सेवा के लिए पुजारियों ने परदा डाला। स्वामी दर्शन के बिना त्यागय्या को बुरा लगा। अपने अहंकार ही परदा बन कर खडा हो गया समझकर इसलिए स्वामी के दर्शन नहीं हो पाये समझकर त्यागय्या चिंतित हो गया। उसी वेदना में ''तेर तीयगरादा-नालोनि-तिरुपति वेंकटरमण मच्चरमनु'' (क्या परदा नहीं हटाया जा सकता। मेरे अंदर के अपराध को क्षमा करके) कीर्तन गाया। गीत समाप्त होते ही वहाँ के लोगों को आश्चर्य में डालते हुए परदा हट गया। स्वामी के

दिव्य दर्शन पाकर त्यागय्या ने बहुत ही संतोष के साथ 'वेंकटेश निन्नु' नामक कीर्तन गाया।

शेषय्या जी को प्राण दान :

तिरुपति की यात्रा पूरा करके त्यागय्या पुत्तूर गया। एक जगह बडी भीड दिखाई पडी। पालकी के नजदीक आते ही एक लाश और लाश के साथ रोनेवाली एक स्त्री अपने बच्चे के साथ सिसकियाँ भरती रोती दिखाई पडी। शिष्यों ने रोने के कारणों का पता लगाया। कोई एक यात्री अपने बाल बच्चों के साथ रात के समय पुत्तूर गया था। उस समय पुत्तूर के चारों ओर घना जंगल था। शेर बडी आजादी से घूमा करते थे। इसलिए किसी घर में रात को आश्रय पाने के लिए यात्री ने किसी मकान के दरबाजे पर खट खटाया। लेकिन घरवाले उसे शेर समझकर भयभीत होकर दरवाजा नहीं खोला। कुछ लोग डाकू समझकर दरवाजा खोलने में डर गए। आखिर मंदिर में रात काटने के लिए मंदिर की तरफ गया। लेकिन बहुत बार बुलाने पर भी पहरेदार ने दरवाजा नहीं खोला। समझ में आया कि पहरेदार ने अंदर दरवाजा बंद करके सो गया है। तब तक काफी देर हो गयी थी। दीवार लांघकर दरवाजा खोलने की बात यात्री के मन आयी। अपनी पत्नी और बच्चों को वहीं छोडकर वह दीवार पर चढ गया। लेकिन अंधेरे में कूदते समय कुएँ में कूद पडे। बहुत देर तक भी दरवाजा नहीं खुलने से यात्री की पत्नी बडी आवाज में रोती हुई बेहोश हो गयी। सुबह होते ही मंदिर के अधिकारियों ने कुएँ में लाश को देखा। उसे बाहर निकाला। लाश के चारों तरफ खडे होकर यात्री की पत्नी और बच्चे चीख चीख कर रोने लगे थे। गांववाले उन्हें सांत्वना देने लगे थे। यह उस लाश की कहानी है।

त्यागय्या ने इस पूरे को देखा और सुना। एक सुहागिन का सुहाग अकारण ही असमय मिट्टी में मिलने की बात को वह पचा नहीं पाया। त्यागय्या ने समझ लिया कि मरनेवाला शेषय्या है, उसके गले में तुलसी की माला को देखकर उसे विष्णु भक्त के रूप में पहचान लिया। तुरंत अपने शिष्यों को आदेश दिया कि 'ना जीवनाधार' कीर्तन गाये। कीर्तन पूरा होते ही शव पर तुलसी जल छिडकाया। तब अद्भुत हुआ। नींद से जागनेवाले की तरह शेषय्या आंखे खोल कर उठ खडा हो गया। अपने को पुनःजन्म देनेवाले त्यागय्या के चरणों पर गिरकर पत्नी और बच्चों के साथ अपनी अधूरी यात्रा को पूरा किया।

तिरुवोत्तियूर संदर्शन :

त्याग्यया की दूसरी यात्रा चेन्नै के समीपवर्ती तिरुवोत्तियूर की है। उस गांव की देवता वडिवुडै अम्मन हैं। आज भी प्रतीति है कि वे माता बहुत शक्ति संपन्न हैं। तिरुवोत्तियूर गांव में ही वीण कुप्पय्या रहा करता था। वह त्यागय्या का शिष्य था। इस कारण से त्यागय्या ने तिरुवोत्तियूर में वीणकुप्पय्या के घर में आतिथ्य स्वीकार किया। इस के अलावा वडिवुडै अम्मन जी पर पंचरत्न कीर्तन गाये। मंदिर की दीवारों पर अधिकारियों ने इसे लिखवाया है। तेलुगु में गाये गये कीर्तनों के लिए तमिल में भी व्याख्या दी गयी है। तिरुवोत्तियूर जानेवाले मंदिर में इन कीर्तनों को देख भी सकते हैं।

इसके अलावा त्यागय्या ने एक और तीर्थ कोवूर की यात्रा भी की। उस गांव के मंदिर की प्रधान मूर्ति सुंदरेश्वर हैं और माताजी सौंदर्य नायकी है। उस गांव के प्रमुखों में सुंदर मुदलियर एक हैं। वह भक्त और कलापिपासी भी है। त्यागय्या और सुंदरमुदलियार के बीच में स्नेह कंची

में रहते समय उपनिषद्ब्रह्म के सान्निध्य में ही हुआ था। एक बार अपने गांव की यात्रा करने की प्रार्थना मुदलियार ने की तो त्यागय्या ने मान लिया और सुंदरेश्वर पर पंचरत्न गाये।

सुंदर मुदलियार धनी था। अपनी प्रार्थना को स्वीकार करके आनेवाले त्यागय्या पर उसका अभिमान बढ गया। किसी भी रूप में त्यागय्या की सहायता करने को उसने सोचा। त्यागय्या यात्रा करनेवाले पालकी में एक हजार सोने के सिक्के छिपाये। उस धन को राम कैंकर्य के लिए उपयोग करने के लिए शिष्यों को आदेश दिया।

राम लक्ष्मण के बाणों की वर्षा :

त्यागय्या गांव गांव यात्रा करके उन गांवों में स्थित देवी-देवताओं की स्तुति में कीर्तन गाकर फिर तिरुवैयूर को लौटने लगे। एक बार जंगल के मार्ग से यात्रा करनी पडी। उस जंगल में चोरों का डर अधिक था। चोर पालकी और नौकरों को दूर से ही पहचाना। उन्होंने चारों ओर से पालकी को घेर लिया। पालकी रुक गयी। शिष्यों ने गुरु से बताया कि चोरों ने पालकी को घेर लिया है।

''चोरों से क्यों डरते हो? चोरों के द्वारा चोरी करने योग्य महंगी चीजें हमारे पास नहीं है?'' ऐसा त्यागय्या ने कहा। पालकी में सुंदर मुदलियार के द्वारा छिपाये पैसे के बारे में शिष्यों ने बताया। अगर ऐसा हो तो 'उन पैसे को चोरों को दे दो' त्यागय्या ने कहा।

तंजावूर रामाराव ने बीच बचाव में कहा ''स्वामी, यह धन हमारा नहीं है। एक भक्त रामनवमी उत्सवों के लिए समर्पित धन है। इसलिए यह

भगवान की संपत्ति है। इस संपत्ति को चोरों के या अन्य किसी के हाथों में सौंपने का अधिकार हमें नहीं है।''

''सच है। अगर वह भगवान की संपति है तो स्वयं भगवान ही उस की रक्षा करेंगे। उसके लिए क्यों चिंता करनी है?'' त्यागय्या ने कहा। भक्ति से राम का स्मरण करते हुए 'मुंदु वेनक इरुपक्कल तोडे मरखरहर रारा रारा' (आगे पीछे दोनों ओर साथी बन कर चोरों को रोकने आओरे) कीर्तन गाया।

अगले क्षण में ही दो युवकों ने वहाँ दर्शन देकर चोरों पर बाण वर्षा की। चोर बाणों की वर्षा से डर कर पलायन हो गये। पालकी आगे बढती गयी। सुबह होने तक वे युवक पालकी के साथ ही रहे। पूरा सुबह होने तक पालकी एक गांव तक पहुंच गयी। पालकी के साथ आनेवाले चोर त्यागय्या के चरणों पर गिरकर क्षमा याचना की। उन्हें त्यागय्या ने रामनाम जप का मंत्रोपदेश दिया।

आश्रित शिष्यवत्सलता :

त्यागय्या के जमाने में त्रिभुवन स्वामिनाथन नामक एक प्रसिद्ध गायक रहा करते थे। वह गायक ही नहीं अभिनेता भी था। अठाना अप्पय्या, तोडि रामय्या की तरह आनंद भैरवी राग गाने में अय्यर ने अपना नाम रखा है।

एक बार तिरुवैयूर में 'कठपुतली खेल' का प्रदर्शन हुआ। उस खेल में अय्यर भी एक पात्र था। अभिनय के कारण या संगीत के कारण उस कठपुतली खेल ने सब को आकृष्ट किया। त्यागय्या के शिष्यों ने भी उस

खेल को देखा। अय्यर के आनंदभैरवी को भी सुना। गुरूजी को भी यह समाचार दिया। शिष्यों की बातों पर विश्वास करके त्यागय्या उस समय कोई जवाब नहीं दिया।

आनंद भैरवी अय्यर :

एक दिन त्यागय्या स्वयं प्रदर्शन देखने गया। तभी अय्यर ने आनंदभैरवी गाना शुरु किया था। सुनी सुनाई बातों की तुलना और भी अधिक अय्यर की आनंद भैरवी ने त्यागय्या को मुग्ध किया। नाटक पूरा हो गया। त्यागय्या मंच पर गया। लोगों ने त्यागय्या को रास्ता दिया। मंचस्थ अय्यर त्यागय्या के आने को पहचान कर नीचे उतर कर उसके चरणों पर गिरकर कहा - ''स्वामी, मैं ने बडा अपराध किया। आप जैसे संगीतज्ञ सभा में रहते मुझे इस रूप में नहीं गाना चाहिए था। कृपा करके मझे क्षमा कीजिए।''

''अय्यर, मेरे शिष्यों ने तुम्हारी प्रतिभा के बारे में बताया था। यह सुनकर ही मैं स्वयं आया। आप के आनंदभैरवी रागालाप से मैं परवश हो गया। मैं हार्दिक रूप से आप की बधाई करता हूँ।'' त्यागय्या ने कहा।

''जी, ऐसा हो तो मुझे एक वरदान दीजिए। आनंदभैरवी की कीर्ति मुझे शाश्वत दीजिए।'' अय्यर ने कहा।

त्यागय्या ने सम्मति प्रकट की। कई रागों में कीर्तन रचनेवाले त्यागय्या ने उसके बाद आनंदभैरवी में कीर्तन नहीं रचे हैं। कला के साथ साथ कलाकार का सम्मान करने का गुण त्यागय्या के जीवन की विशेषता है।

गोपाल कृष्ण भारती :

त्यागय्या के जमाने में गोपालकृष्ण भारती नामक संगीतज्ञ रहा करता था। जनसुलभ भाषा में ललित संगीत में उन्होंने कई गीत तमिल भाषा में लिखे हैं। उन दिनों में ऐसा कोई नहीं होता था जो भारती का गीत नहीं गाता था। भारती के गीतों की इतनी लोकप्रियता थी। उस महानुभाव ने नंदनार चरित लिखा है। भारती एक बार त्यागय्या के आशीष पाने तिरुवैयूर गया।

घर आये अतिथियों का सत्कार करना त्यागय्या अपना धर्म मानता है। उसके पहले त्यागय्या ने भारती को नहीं देखा था। निराडंबर रहनेवाले भारती को देखकर त्यागय्या उन्हें आदर देकर ''आप का कौन सा गांव है?'' प्रश्न किया।

''ऐसा है। आप गोपालकृष्ण भारती को जानते हैं? सुना है कि तमिल में आजकल उन्होंने कई जनरंजक गीत गाये हैं। मैं ने भी कुछ को सुना है। बहुत अच्छे हैं।'' त्यागय्या ने कहा।

भारती को तकलीफ हुई। परोक्ष में अपनी प्रशंसा करनेवाले त्यागय्या जैसे को देखकर उन्हें आश्चर्य के साथ आनंद भी हुआ।

''स्वामी जी, मैं ही वह गोपालकृष्ण भारती हूँ। आप के दर्शन करने आया हूँ।'' विनय के साथ भारती ने कहा।

उस संदर्भ में शिष्य 'अभोगी' राग में गीत गा रहे थे। गीत समाप्त होते ही ''आपने अभोगी राग में कोई गीत लिखा? सुनाइए'' कहा त्यागय्या ने।

भारती ने कोई जवाब नहीं दिया। शिष्यों ने तुरंत दूसरी कृति गाना शुरु किया।

उस दिन की रात को अभोगी राग में एक तमिल गीत स्वयं लिखकर अगले दिन स्वयं ने गाया। गीत और गीत में स्थित साहित्य को देखकर त्यागय्या को बहुत संतोष हुआ। एक दिन में ही इतनी मेहनत करनेवाले भारती की उन्होंने खूब प्रशंसा की है।

अपने आप बडे महात्मा होते हुए भी दूसरे की प्रतिभा को पहचान कर उनकी प्रशंसा करना त्यागय्या के जीवन में देख सकते हैं।

वीण कुप्पय्यर :

त्यागय्या के शिष्यों में वीण कुप्पय्यर एक हैं। कुप्पय्यर वीणा बजाने में कुशल है। फिर भी त्यागय्या के पास कीर्तन सीखने शिष्य बनकर आया है। अपनी पांडित्य, वीणा बजाने की प्रतिभा के बारे में कुप्पय्यर ने नहीं बताया। लेकिन त्यागय्या के द्वारा बजाये जानेवाली वीणा को स्वयं बजाने की इच्छा रखता था कुप्पय्यर। वह अवसर आ ही गया।

एक दिन काम से त्यागय्या गांव में गया। शिष्यों में कोई घर में नहीं था। कप्पय्यर ने गुरु की वीणा को लेकर श्रुति ठीक करके बजाना शुरु किया। श्रुति मधुर रूप में वीणागान चल रहा था। इतने में रसोई में काम करनेवाली त्यागय्या की पत्नी कमलांबा 'कौन वीणा बजा रहे हैं' जानने के लिए वरंडा में देखा। कुप्पय्यर को आंखे बंद करके वीणा बजाने में लीन होते देखा। इस बीच त्यागय्या आ ही गया। घर के अंदर वीणा को बजने को सुना। इतने अच्छे ढंग से कौन वीणा बजा रहा है, सोचते हुए

अंदर आया। गुरूजी को देखते हुए कुप्पय्यर कांपते हाथों से वीणा को नीचे रखा और अपराधी की तरह हाथ जोडे खडा हो गया।

''स्वामी जी, आप की अनुमति के बिना आप की अनुपस्थिति में वीणा लेकर बजाना मेरा अपराध ही है। मुझे क्षमा कीजिए।'' कुप्पय्यर ने कहा।

''कुप्पय्या, क्षमा करने के लिए तुम ने कौन सा अपराध किया। इतना अच्छा तुम वीणा बजा सकते हो, मुझे मालूम नहीं था। तुम ने मुझ से कभी नहीं कहा।'' कहते हुए उसे पास बुला कर त्यागय्या ने आशीर्वाद दिया।

तुलसीदलों से :

त्यागय्या को शिष्यों पर अपार प्रेम था। त्यागय्या के शिष्यगण में वेंकटरमण भागवतार के शामिल एक विलक्षण ढंग से हुआ। वेंकटरमण भागवतार अय्यमपेट नामक गांव में रहा करते थे। अय्यमपेट तिरुवैयूर के समीपवर्ती गाँव था। भागवतार को संगीत के प्रति बहुत प्रेम था। किसी भी रूप में वह त्यागय्या का शिष्य बनना चाहता था। इसी कारण से रोजाना तिरुवैयूर जाकर त्यागय्या के भजन कार्यक्रमों में भाग लेता था। भागवतार ने निश्चय कर लिया कि किसी भी रूप में स्वामी जी की सेवा करना चाहिए। इसलिए अपने गांव के तुलसी की मालाएँ अधिक संख्या में लाकर समर्पित करता था। शिष्यगण तुलसी मालाओं को स्वीकार करके पूजा के लिए त्यागय्या को समर्पित करते थे। इस रूप में कई दिन बीत गए। एक दिन भागवतार बीमार पड गया। त्यागय्या की पूजा के

लिए तुलसी की मालाएँ पहुंचा नहीं सका। पर्याप्त तुलसी मालाएँ न पाकर त्यागय्या ने शिष्यों से पूछा। शिष्यों ने बताया कि आज भागवतार नहीं आया है। उस दिन तक त्यागय्या ने सोचा था कि तुलसी की मालाएँ अपने शिष्य ही बना रहे हैं। असलियत को जानने के बाद त्यागय्या ने भागवतार को देखना चाहा। दूसरे दिन भागवतार आ ही गया। त्यागय्या ने उसे पास बुलाकर आशीर्वचन देकर अपना शिष्य बना लिया। 'तुलसीदलमुलचे' (तुलसी मालाओं से) नामक कीर्तन में इस घटना को अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत भी किया है।

स्वाति तिरुनाल :

तिरुवानकूर का महाराज स्वाति तिरुनाल थे। वे संगीतप्रिय थे। वाग्गेयकार भी थे। कन्नय्या भागवतार के द्वारा त्यागय्या के बारे में सुना है। दूसरों के द्वारा त्यागय्या के कीर्तनों को गाते उनके माधुर्य-सौंदर्य से प्रभावित हुए। इसलिए एक बार त्यागय्या को देखने की इच्छा अपने मित्रों के बीच में प्रकट की।

तिरुवानकूर का दरबारी गायक वडिवेलु था। वह तंजावूर प्रदेश का ही था। स्वाति तिरुनाल से तीन साल बडा था। वडिवेलु प्रसिद्ध वैणिक भी था। वीणकुप्पय्यर का मित्र भी था। इसलिए महाराज की इच्छा की पूर्ति करने वडिवेलु तिरुवारूर गया। तिरुवारूर में तिरुमंजन वीथी में ठहरा। त्यागय्या कावेरी नदी में स्नान संध्यादि पूरा करने के लिए उस घर की ओर से ही जाता है।

त्यागय्या के कावेरी नदी को जाते समय ही वडिवेलु गाता था। पहले दिन वडिवेलु के गीत ने त्यागय्या को अपनी ओर आकर्षित किया। दूसरे

दिन रुकने के लिए विवश किया। तीसरे दिन अपने आवेश को काबू न रख पाने की स्थिति में त्यागय्या ने घर के अंदर कदम रखा। अपने घर में त्यागय्या को आते देखकर वडिवेलु ने कहा - ''महानुभाव, आज का दिन मेरे जीवन में अस्मरणीय दिन है। किसी से खबर पहुंचाने पर मैं स्वयं आप के पास आ जाता। आप जैसे महात्मा मेरे घर पर आकर मुझे गौरव देना मेरे पूर्व जन्मों का फल है।''

त्यागय्या ने वडिवेलु के संगीत की खूब प्रशंसा की और अगले दिन अपने घर उसे बुलाया। वडिवेलु स्वीकार करके अगले दिन उसके घर पर गया। वहाँ स्वाति तिरुनाल कृतियों का गायन करके त्यागय्या के हृदय को जीत लिया। बात बातों में ही वडिवेलु ने त्यागय्या से कहा - ''स्वामी, तिरुवानकूर के महाराज स्वाति तिरुनाल आप से मिलना चाहते हैं और आप के कीर्तन सुनना चाहते हैं।'' बात पूरा होने के पहले ही त्यागय्या के आश्चर्य को वडिवेलु ने पहचान लिया। त्यागय्या ने मौन रखा। उसके बाद दीर्घ सोचते हुए त्यागय्या ने कहा - ''जरूर महाराज से मिलूंगा। लेकिन हमारा मिलन इस लोक नहीं होगा। बल्कि वैकुंठ में होगा। स्वाति तिरुनाल के आराध्य पद्मनाभ स्वामी और मेरा राम दोनों एक ही हैं।''

अपना दौत्य असफल होने से चिंतित होकर वडिवेलु तिरुवांकूर लौटने लगा। राजनीतिक कारणों से स्वाति तिरुनाल भी तिरुवारूर नहीं आ सका। त्यागय्या के पहले स्वर्गवास हुआ। त्यागय्या की बात सच निकली।

आश्रितों के प्रति, पंडितों के प्रति, शिष्यों के प्रति त्यागय्या को बहुत गौरव, आदर, अभिमान था। उपर्युक्त प्रसंग ही इसके लिए साक्ष्य प्रमाण हैं।

रचनाएँ :

वाल्मीकी रामायण में लगभग 24000 श्लोक हैं। कहा जाता है कि उन्हीं के समानांतर त्यागय्या ने भी 24000 श्लोक लिखे हैं। परन्तु प्रकाशित पुस्तकों में सिर्फ 600 तक ही प्राप्त होते हैं। इन को छोडकर 'प्रह्लाद विजय' नामक पांच अंकों वाला नाटक, 'नौका चरित' नामक गीति-नाट्य, 'सीताराम विजय' नामक नाटक को त्यागय्या ने लिखा है। लोगों का विचार है कि त्यागय्या ने लगभग 200 रागों का प्रयोग किया है।

त्यागय्या भक्ति को महत्व देनेवाले वाग्गेयकार है। आडंबर आचारों, जनता की दुर्बलताओं, राजाओं की कुटिलताओं को शिष्ट व्यावहारिक भाषा में सीधे आलोचना करते हुए उन्होंने कीर्तनों की रचना की है। त्यागय्या ने अनेक पंचरत्न कीर्तनों को रचने पर भी सिर्फ घनराग पंचकीर्तन ही विशेष हुए हैं। वे निम्नांकित हैं -

नाटराग - आदिताल - जगदानंद कारक जय जानकी प्राणनायक

गौल राग - आदिताल - दुडुकुगल नन्ने दोर कोडुकु प्रोचुरा

आरभि राग- आदिताल - साधिंचेने ओ मनसा

वराली राग- आदिताल - कनकन रुचिरा

श्रीराग - आदिताल - एंदरो महानुभावुलु

सायुज्य होना :

वह सन् 1847 पुष्य शुद्ध दशमी का दिन था। त्यागय्या रामनाम स्मरण करते हुए सो गया था। सपने में श्रीराम साक्षात्कार होकर ''त्याग्य्या, तुम्हारी अंदर की इच्छा को मैं ने पहचान लिया। तुम्हारी इच्छा की पूर्ति करूंगा। अब से दस दिनों में अपनी भौतिक देह त्यागकर मुझ में सायुज्य हो जाओगे।'' कहते हुए राम अतंर्धान हो गए। त्यागय्या के आनंद की सीमा नहीं रही।

उस दिन पुष्य शुद्ध एकादशी थी। त्यागय्या को एकादशी भजनों पर असीम प्रीति था। भजन के संदर्भ में एकत्रित शिष्यगणों को तथा पुरजनों को अपनी प्रीति के अनुसार त्यागय्या ने सत्कार किया। पुष्य बहुल चतुर्थी आयी। परमहंस ब्रह्मानंदेंद्र स्वामी के नेतृत्व में त्यागय्या ने सन्यासाश्रम स्वीकार किया। नादब्रह्मनंद स्वामी के रूप में नामांकित हुआ। उसके बाद नादब्रह्मानंद स्वामी सभासदों को संबोधित करने की इच्छा प्रकट की -

''कल सुबह 11 बजे राम मुझे अपने में लीन कर लेंगे। इसलिए अब से बिना रुके भजन कीजिए।''

यह समाचार जंगल की आग तरह फैल गया। हजारों संख्या में जनता का आना शुरु हो गया। सिद्धि प्राप्त करनेवाले दिन वागधीश्वरी राग में 'परमात्मुडु जीवात्मुडु' (परमात्मा जीवात्मा) नामक कीर्तन, मनोहरी राग में 'परितापमु' नामक कीर्तन को गाकर योगसमाधि में बैठ गए। त्यागय्या के बताये निर्णीत समय को ही त्यागय्या का कपाल तोडकर एक दिव्य तेज कांति गगन में उड गयी।

त्यागय्या की सिद्धि प्राप्त करने के उपरांत उन के शिष्यों ने गुरुजी की इच्छा के अनुसार कावेरी नदी के तट पर शोंठी वेंकटरमणय्या समाधि के बगल में ही अंतिम संस्कार किए। उसके ऊपर बृंदावन बनाया।

आराधना :

त्यागय्या की सिद्धि पाने के दिन से प्रत्येक वर्ष कुछ शिष्य पूजा करके उनके घर के पास उनकी आराधना किया करते थे। सन् 1907 से तिल्लस्तानम नरसिंह भागवतुलु पंजु भागवतुलु, वयोलिन गोविंदस्वामी पिल्लै ने बडे पैमाने पर आराधनोत्सव करना आरंभ किया। बेंगुलूर नागरत्नम्मा ने अपनी कमाई के पूरे धन को खर्च करके सन् 1925 को त्यागय्या की समाधि पर मंदिर बनवाया। 24 से त्यागब्रह्म आराधना महोत्सव सभा की स्थापना की गयी। प्रत्येक वर्ष संपन्न होनेवाले आराधनोत्सवों में अब भी हजारों की संख्या में जनता भाग ले रही है।

तमिल देश में पैदा होकर तेलुगु कीर्तनों को रचकर कर्नाटक संगीत में कीर्तनों को गानेवाले त्यागय्या सचमुच ही धन्य जीवि हैं। त्यागय्या का निराडंबर जीवन, निर्मल राम भक्ति और निरंतर नादब्रह्मोपासना ने आज भी उन्हें अपने हृदयों में बसा कर रखा। उनकी दिव्य तेज-कांति आज भी संगीत साम्राज्य को शासन कर रही है।

''नाद धेनुवु पिंडि नवनीत मंदिंचे त्यागय्या स्वामी तन्मयुंडु''

(''नाद रूपी धेनु को दुहकर त्यागराज स्वामी ने जनजन को नवनीत प्रदान किया।'')

यागय्या के अत्यंत रंजक कीर्तनों में कुछ

1. मध्यमावती राग आदिताल

पल्लवि :

वेंकटेश निनु सेविंपनु पदि
वेल कनुलु गावले नय्या ।। वेंकटेश ।।

अनुपल्लवि :

पंकजाक्ष परिपालित मुनिजन
भावुकमगु दिव्य रूपमुनु गोन्न ।। वेंकटेश ।।

चरण :

एक्कुव नीवनि दिक्कुलु पोगड
अक्कर गोनि मदि सोक्कि कनुगोन
निक्कमु नीवे ग्रक्कुन ब्रोवुत
लुक्कनि मेरसे चक्कतनमु गल ।।वेंकटेश ।।
ए नोमु फलमो नी नामामृत
पानमु अनु सोपानमु दोरिकेनु
श्री नायक! परमानंद नीसरि
गानमु शोभायमानांघ्रमुलु गल ।। वेंकटेश ।।
योगिहृदय नीवे गतियनु जन
भागधेय! वर भोगीशशयन!
भागवतप्रिय त्यागराजनुत
नागाचलमुपै बागुग नेलकोन्न ।। वेंकटेश ।।

अर्थात्

मध्यमावती राग आदिताल

पल्लवि :

सुनो वेंकटेश! तुम्हारी सेवा के
लिए चाहिए दस हजार हाथ ।।वेंकटेश ।।

अनुपल्लवि :

पंकजाक्ष परिपालित मुनिजनों से आप के
दिव्य रूप के भाव को समझने के लिए ।।वेंकटेश ।।

चरण :

सब से बडे सभी के कहने पर
आवश्यक समझकर अपने मन में बसा लिया
सच है सब से शीघ्र तुम ही तारने
वाले निपुण तुम ही हो ।। वेंकटेश ।।
कौन से व्रत का फल हो तुम्हारा नामामृत
पीने का सौभाग्य प्राप्त हुआ
हे श्री नायक! परमानंद स्रोत
तुम्हारे कीर्तन अत्यंत शोभायमान
योगी हृदय के सिर्फ तुम ही गति हो
हे भागधेय! वर भोगीश शयन!
भागवत प्रिय त्यागराजनुत
शेषाचल पर अच्छे ढंग से बसे हुए! ।। वेंकटेश ।।

2. आंदोली राग देशाधिताल

पल्लवि :

रागसुधारसपानमु जेसि राजिल्लवे! मनसा ।।राग ।।

अनुपल्लवि :

याग योग त्याग भोग फलमोसंगे ।। राग ।।

चरण :

सदाशिवमयमगु नादोंकार स्वर

विदुल जीवन्मुक्तुलनि त्यागराजु तेलिय ।। राग ।।

अर्थात्

2. आंदोली राग देशाधिताल

पल्लवि :

रागसुधारस पानकर के रंजित हो! हे मन! ।।राग ।।

अनुपल्लवि :

याग, योग, त्याग, भोग का फल देगा ।। राग ।।

चरण :

सदाशिवमय होनेवाले नादोंकार स्वर

जीवन्मुक्त समझते हैं त्यागराजु ।। राग ।।

3. कल्याणी राग चापु ताल

पल्लवि :

निधि चाल सुखमा? रामुनि स

न्निधि सेव सुखमा? निजमुग बल्कु मनसा! ।। निधि ।।

अनुपल्लवि

दधि नवनीत क्षीरमुलु रुचियो? दाश
रथि ध्यान भजन सुधारसमु रुचियो ।। निधि ।।

चरण :

दम शममनु गंगास्नानमु सुखमा? क
र्दम दुर्विषय कूपस्नानमु सुखमा?
ममत बंधनयुत नरस्तुति सुखमा?
सुमति त्यागराजनुतुनि कीर्तन सुखमा? ।। निधि ।।

अर्थात्

3. कल्याणी राग चापु ताल

पल्लवि :

क्या धन सुख देता है? या राम की
सेवा सुख देती है? रे मन सच सच बताओ!
।।निधि ।।

अनुपल्लवि

क्या दही-माखन से बने पक्वान्न स्वादिष्ठ है?
या दाशरथि के भजन का सुधारस स्वादिष्ठ है? ।। निधि ।।

चरण

क्या शरीर के ताप को कम करने में गंगास्नान सुख देता है?
कर्दम दुर्विषय कुएँ का स्नान सुख देता है?

ममता के बंधनों के युक्त मनुष्य की स्तुति सुख देता है?

या सहृदय से कीर्तन करनेवाला त्यागराजु कीर्तन सुख देता है?

॥ निधि ॥

4. हिंदोल राग आदि ताल

सामज वरगमन! साधुह्

त्सारसाब्ज पाल! कालातीत! विख्यात!

साम निगमज सुधामय गान वि

चक्षण गुणशील दयालवाल मां पालय! ॥ साम ॥

नादाचलदीप स्वीकृत

यादवकुल मुरलीवादन वि

नोद! मोहनकर! त्यागराजवंदनीय ॥ साम ॥

* * *